International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले में अबूझमाड़िया जनजाती की सामाजिक–आर्थिक संरचना का भौगोलिक अध्ययन

संतोष पटेल
सहायक प्राध्यापक विभाग भूगोल, शासकीय महाविद्यालय भंवरपुर, जिला महासमुन्द (छ.ग.)
डॉ. लोकेश पटेल
सहायक प्राध्यापक (अति.व्या.) विभाग भूगोल, डॉ. भंवर सिंह पोर्ते शासकीय महाविद्यालय पेण्ड्रा, जिला–जी. पी.एम. (छ.ग.)

सार

प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के नारायणपुर जिले में निवासरत अबूझमाड़िया जनजाति की सामाजिक–आर्थिक संरचना का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह जनजाति अबूझमाड़ क्षेत्र के दुर्गम, सघन वन एवं पर्वतीय भौगोलिक परिवेश में निवास करती है तथा परंपरागत रूप से निर्वाहकारी अर्थव्यवस्था पर आधारित जीवन–यापन करती है। अध्ययन का मुख्य उद्देष्य अबूझमाड़िया जनजाति की सामाजिक संरचना, परिवार व्यवस्था, आजीविका के साधन, कृषि पद्धतियां, वनोपज संग्रहण, भोजन–पेय, धार्मिक विश्वास, पर्व–त्योहार तथा आर्थिक गतिविधियों का समुचित मूल्यांकन करना है।अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों के साथ–साथ क्षेत्रीय सर्वेक्षणों से प्राप्त तथ्यों का उपयोग किया गया है। निष्कषों से स्पष्ट होता है कि अबूझमाड़िया जनजाति की सामाजिक–आर्थिक संरचना पूर्णतः भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित है। हाल के वर्षों में षिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं आधारभूत सुविधाओं के विस्तार से इनका जीवन–स्तर धीरे–धीरे परिवर्तन की ओर अग्रसर हुआ है, किन्तु मुख्य धारा से सामाजिक–आर्थिक सम्योगन की प्रक्रिया अभी भी धीमी है। यह अध्ययन जनजातिय विकास, क्षेत्रीय योजना एवं समावषेशी विकास नीतियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

कुंजी शब्द:अबूझमाड़िया जनजाति, सामाजिक–आर्थिक संरचना, भौगोलिक अध्ययन, नारायणपुर जिला, जनजातिय विकास।

परिचय

अबुझमाड़िया जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के नारायणपुर जिले के नारायणपुर एवं ओरछा विकासखण्ड में निवासरत है, जिसे अबुझमाड़ क्षेत्र कहा जाता है। यह जनजाति सभ्य समाज से पृथक

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अबुझमाड़ क्षेत्र के सघन वनों एवं पहाड़ियों में निवास करती है। अबुझामाड़िया जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में ऐतिहासिक प्रमाणों का अभाव है। अबूझमाड़िया जनजाति, गोंड जनजाति की उपजाति है। पं. केदारनाथ ठाकुर ने बस्तर भूषण 1908 नामक ग्रंथ में माड़िया जनजाति का सविस्तार वर्णन किया है। उनके अनुसार, बस्तर में माड़ियाओं की पहचान तीन तरह से की जाती है। प्रथम आबझूमाड़िया द्वितीय दण्डामी या गौरसिंग (बायसन हार्न) माड़िया और तृतीय दोर्ला माड़िया। मुरिया–माड़िया अपने आपको कोई तूगेंर या कोथां कहना गौरव महससू करते है जो माड़िया बस्तर के घने जंगलों और उँचे पहाड़ियों पर निवास करते है वे अबूझमाड़िया, कहलाये जो माड़िया मैदानी भग में निवास करते है वे दण्डामी या गौरसिंग माड़िया कहलाये। दण्ड का अर्थ मैदानी जंगल होता है। वन एवं पहाड़ों से युक्त अबूझमाड़ क्षेत्र में अबूझमाड़िया जनजाति के ग्राम छोटे व विरल जनसंख्या के होते हैं। अबूझमाड़िया ग्राम, पहाड़ी ढलान या पहाड़ों के समीप के समतल स्थल पर बसे होते है। पूर्व में अबूझमाड़िया खेती (स्थानांतरित कृषि) के कारण निश्चित अवधि में नियत भू–भाग में स्थानांतरित होते थे किंतु वर्तमान में शिक्षा, पेयजल, स्वास्थ्य व पोषण, राशन दुकान संबंधी अधोसंरचनात्मक सुविधाओं के विकास एवं पेंदा खेती (स्थानांतरित कृषि) में कमी के कारण ग्राम की बसाहट स्थायी हो रही है।

अध्ययन क्षेत्र :

अबुझमाड़िया जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर सभाग के अंतर्गत मुख्यतः नारायणपुर जिला में निवास करती है। यह जिला $19^0 5'45''$ उत्तरी अक्षांस से $19^0 5'45''$ उत्तरी अक्षांस तथा $80^0 42'0''$ पूवी देशांतर से $81^0 30'12''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इस जिले का कुल क्षेत्रफल 6913.16 वर्ग कि.मी.तथा 2011 के जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 139820 है। यह जिला अबुझमाड़ पहाड़ियों के अंतर्गत विस्तृत है। यह एक अत्यंत दुर्गम क्षेत्र है। विशेष पिछड़ी जनजाति के आधारभूत सर्वेक्षण के अनुसार अबूझमाड़िया जनजाति नारायणपुर जिले के नारायणपुर विकासखंड के 14 व ओरछा (अबूझमाड़) विकासखंड के 235 ग्राम कुल 249 ग्राम में निवासरत है, जिसमें ओरछा क्षेत्र के कुछ ग्राम विरान है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है :–

- अबुझमाड़िया प्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजातियां हैं।
- अबूझमाड़िया जनजाति सामाजिक, आर्थिक स्तर क्या है, इसका आंकलन करना।

व्यवसाय :

अबूझमाड़िया जनजाति की अर्थव्यवस्था निर्वाहक है। पर्णूतः प्रकृति पर आधारित है। कृषि, वनोपज सग्रंहण शिकार एवं कुटीर उद्योग इस जनजाति का प्रमुख व्यवसाय है। कृषि में पहले ये लोग स्थानान्तरित कृषि करते थे। वे इसको पेदां अर्थात् पहाड़ काटना कहते थे। मुखिया के राय से भूमि चयन कर पेंदा तैयार किया जाता था अब ये लोग धीरे धीरे स्थायी कृषि करने लगे है अबुझमाड़िया जनजाति शिकार में दक्ष होते हैं और तीर–धनुष, फरसा आदि से जंगल के छोटे–बड़े जीव–जन्तुओं, पशु–पक्षियों का शिकार करते हैं। वर्षाकाल में नदी–नालों, तालाबों से मछली, केकड़ा, कछुआ आदि पकड़ते हैं। पशुपालन के रूप में **गाय,**

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

बैल, बकरा–बकरी, सुअर, मुर्गा–मुर्गी आदि पालते हैं। ये जनजाति वनभूमि में पेंदा कृषि तथा स्वयं की उपलब्ध कृषि में आदिम पद्धति से कृषि करते हैं तथा धान, कोदो, कुटकी, मड़िया, कोसरा, उड़द, तील एवं मक्का आदि की खेती करते हैं।

भोजन एवं पेय पदार्थ

अबूझमाड़िया मांसाहारी एव ंशाकाहारी दोनों होते है। ये भोजन के रूप में कोसरा,कोदो–कुटकी, चांवल, मक्का, मूंग, उड़द दाल एवं सब्जियों का प्रयोग करते है। ये शिकार द्वारा प्राप्त जानवर जैसे सूअर, कोटरी, खरगोश पक्षी आदि के अतिरिक्त मछली, मूर्गा एवं बकरा का मांस सेवन करते है। इनके दैनिक भोज्य पदार्थ में वन से प्राप्त अनेक प्रकार के कंदमूल, भाजी, लाल चींटी (चाखना) चूहा, घोघां, केकड़ा, मेढंक का भी सेवन करते है। पेय पदार्थ के रूप में सल्फी, महुआ का शराब चांवल का लांदा इन्हें प्रिय है।

सामाजिक व्यवस्था

अबूझमाड़िया परिवार पितृसत्तात्मक होते है। पटेल, गायता, ओझा गुनिया आदि इस जनजाति के सामाजिक सगंठन के प्रमुख घटक होते है जाति पचांयत में पटेल गायता आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिक एवं धार्मिक कार्य भी इन लोगों के मार्गदर्शन में सम्पन्न होता है। अबूझमाड़िया परिवार पितृसत्तात्मक परिवार है अर्थात् परिवार में पिता प्रमुख होता है। अबूझमाड़िया जनजाति में आवास के आधार पर पितृस्थानीय एवं नव–स्थानीय परिवार पाये जाते हैं। इन नातेदार परिवारों के संयुक्त रूप को कुटुम्ब या कुल की संज्ञा दिया जा सकता है। इसके सदस्य रक्त संबंधी होते हैं तथा एक–दूसरे से संबंधों को स्पष्टतः जानते हैं। वंश में अनेक कुटुम्ब का योग होता है तथा ''कट्टा'' (गोत्र) में अनेक वंशों का समावेश होता है। अबूझमाड़िया जनजाति में गोत्र एवं गोत्र चिन्ह (टोटम) पाये जाते हैं। इनमे करमा, दोरपा, जाटा, वड्डे, कोर्राम, दोदी आदि गोत्र पाये जाते है। घोटुल अबूझमाड़िया जनजाति का सामाजिक जीवन सुसंगठित, उल्लासपूर्ण एवं सहकारिता से परिपूर्ण है। अबूझमाड़िया जनजाति में घोटुल (युवागृह) पाया जाता है। अबूझमाड़िया घोटुल में, बालक–बालिका की सदस्यता 8–10 वर्ष की उम्र से प्रारंभ होती हैं तथा उनकी सदस्यता विवाह तक रहती है।

मृतक की मृत्यु स्वाभाविक होने पर शव को दफनाया जाता है। दुर्घटना, जादू टोना, या बीमारी से मृत्यु होने पर शव को जलाया जाता है। किसी अपराध के कारण मृत्युदण्ड पर फांसी की सजा होने पर मृतक का वस्त्र या अन्य वस्तु अर्जित कर पुतला को जलाया जाता है। दफनाते समय मृतक सिर पूर्व में तथा पैर पश्चिम मेंरखा जाता है। अन्तिम सस्कार के दौरान मृतक की सभी वस्तुओं को श्मशान में जला देते है या रख देते है इनमें मृतक की आत्मा की प्रसन्नता हेतु गाय एवं सअूर एवं मूर्गे की बलि दी जाती है तथा गाय के पुंछ को श्मशान में शव के समीप लटकाया जाता है। मृतक के याद में स्मृति स्तम्भ (उरूसकाल) गड़ाया जाता है। स्मृति स्तम्भ पत्थर का होता है तब ये अनुमान लगाते है कि यदि पत्थर पढ़ता है तो मृतक की आत्मा प्रसन्न है।

आर्थिक जीवन

अबूझमाड़िया जनजाति की अर्थव्यवस्था प्रकृति पर आधारित निर्वाह की अर्थव्यवस्था है। अबूझमाड़िया जनजाति का आर्थिक जीवन वनोपज संकलन, शिकार, पशुपालन, आदिम कृषि एवं परंपरागत कृषि पर आधारित है। जिसमें परिवार उत्पादन की इकाई के रूप में कार्य करता है। अबूझमाड़िया सदस्य वनों से

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

कंदमूल एवं वनोपज संकलन करते हैं। संकलन का कार्य परिवार के सभी अर्धकार्यशील व कार्यशील सदस्य करते हैं। ये वन से अनेक प्रकार के जंगली कंद, भाजियां, पत्तियां, फूल, फल, बांस का नवीन कोमल तना (बास्ता या करील), विभिन्न प्रकार के मशरूम आदि का संकलन खाद्य सामग्री के रूप में करते हैं। वे आंवला, आम, इमली, जामुन, कोसा, शहद, चार, फूलबाहरी, महुआ आदि का संग्रहण बाजार में मुद्रा या वस्तु विनियम के लिये करते हैं, जिसके माध्यम से वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते है। अबूझमाड़िया जनजाति के पुरूष सदस्य एकल एवं सामूहिक शिकार करने में दक्ष होते हैं। ये शिकार के लिए गुलेल, तीर–धनुष, फरसा, विभिन्न प्रकार के जाल आदि का उपयोग करते हैं। सामूहिक शिकार प्रायः गर्मी के मौसम में किया जाता है। जिसमें पतझड़ एवं दावानल के कारण शिकार करना आसान हो जाता है। अबूझमाड़िया हिरण, कोटरी, बारहसिंगा, जंगली सुअर, चुहे, खरगोश, चिड़िया, जंगली मुर्गा आदि का शिकार करते हैं।

देवी देवता एवं पर्व उत्सव

अबूझमाड़िया जनजाति का धार्मिक जीवन आदिम है। ग्राम के धार्मिक प्रमुख को पेरमा या पुजारी कहते है। अबूझमाड़िया जनजाति में त्योहार से पहले नयी फसल, फल सब्जी का सवेन निषेध है। वे त्योहारों के माध्यम से प्रकृति की अराधना तथा उसके प्रति कृतघ्नता ज्ञापित करते है। गौर सिंग नृत्य जो प्रायः विवाह के अवसर किया जाता है इनका प्रमुख नृत्य है। परेमा धार्मिक उत्सवों शिकार तथा बलि से सम्बंधित कार्यो को सम्पन्न कराता है। आगां देव इनका सबसे बड़ा देव है। इनके प्रत्येक ग्राम में देव गुड़ी अवश्य होती है। इस प्रकार अबूझमाड़िया प्रकृति पजूक है। इसके अलावा दन्तेवाड़ा की दन्तेश्वरी देवी इनकी आराध्य देवी है। अन्य जनजातियों की तरह ये लोग जादू, टोना, भूत प्रेत, झाड़फकूं पर विश्वास करते है। भूमि पुजारी को गायता कहते है। वड्डे गोत्र पुजारी को कहते है। लेस्के झाड़फंकू व दवाई देने वाले को कहते है। ककसाड़, भीमल, वर्षा की पूजा का पर्व, महुआ पडुंम, बीज पंडुम, नवाखानी, दशहरा, दिवाली, विजा कोड तांग (हरियाली) आदि इनका प्रमुख पर्व है ककसाड़ जात्रा अबूझमाड़िया जनजाति का सबसे महत्वपर्णू त्योहार है। इसमें कुल गोत्र की देवी–देवताओं की पूजा की जाती है। यह पर्व मई जून माह में मनाया जाता है। इस नृत्य में पुरूष सिर में वन भैसा का सिंग पहने रहते है तथा गले में मांदर लटकाये रहते है। महिलाएं, लकड़ी का दण्डा लेकर एक दूसरे का कमर पकड़कर नाचती है। इन जनजाति के अन्य नृत्य कड़साल, कोडतापाटा, आनापाटा आदि है। मड़ई पर्व महत्वपूर्ण अनुष्ठानिक पर्व है जो फरवरी माह में मनाते है। पेड़ पौधों की पूजाकर उनके आस पास नृत्य करने की परंपरा माड़ियों में अन्य आदिवासियों की तरह देखी जाती है। इनमें कोटकी घोड़ा नृत्य भी प्रचलित है। इनके घोटूल के अन्दर तालूरमुन्ते देव की पूजा की जाती है। कौमार्य संस्कार को कांडाबरा या पुष्प विवाह कहते है। काकसाड़, गेड़ी और रिलो प्रमुख नृत्य है। लिंगोपेन इनके आदि पुरूष। अबूझमाड़ क्षेत्र को मेटाभूम या मेटा कोइतोर भी कहते है। वस्त्र, आभूषण, गोदना एवं बोली अबूझमाड़ियाओं की बोली अबूझमाड़ी है जिसे कोया भी कहा जा सकता है। इनकी स्त्रियां प्रायः ब्लाउज नहीं पहनती है। शिक्षा के प्रभाव से इनका वस्त्र आभूषण बदल रहा है। बांस अथवा लकड़ी की कंघियां बनाना माड़ियाओं का प्रिय शौक हैं। कंघी युवा महिलाओं के लिये प्रेम का प्रतीक है। मूंगा माला शीशे का माला सस्ते धातू का आभूषण महिलाएं पहनती है। महिलाएं प्रायः गोदना गोदवाती है। पुरूष प्रायः

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

उघड़े बदन लंगोटी व बडी पहनकर रहते है और कहीं कहीं धोती, कुर्ता, बडी कमीज पछां धारण करते है। माड़िया स्त्रियां बदन पर एक साड़ी लपेटती है।

निष्कर्ष :

अबूझमाड़ क्षेत्र में शासन एवं प्रशासन के सतत् प्रयास से विकास की गंगाबहने लगी है। अबझूमाड़िया जनजाति अब शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, पेयजल एवं अन्य शासकीय योजनाओं का लाभ अर्जित कर विकास की मुख्य धारा से जुडते जा रहे हैं किन्तु मुख्य धारा से जुड़ाव की गति अभी भी धीमी है इसे तीव्र कर इस जनजाति मे व्याप्त अन्धविश्वास गरीबी, पिछड़ापन आदि को दूर किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. श्री कमल मध्यप्रदेश की जनजातियाँ समाज एवं व्यवस्था म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भापेाल
2. त्रिपाठी कौशलेन्द्र चन्द्राकर (2012) छत्तीसगढ़ एटलस एस शारदा पब्लिकेशन, बिलासपुर(छ.ग.)
3. हसनैन नदीम (1997 जनजातीय भारत जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली।
4. हीरालाल शुक्ल, छत्तीसगढ़ का जनजातीय इतिहास, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2007.
5. महरोत्रा, रमेशचन्द्र, छत्तीसगढ़, वैभव प्रकाशन रायपुर (छ.ग.), 2001.
6. निवेदिता वर्मा, जनजातीय संस्कृतिः बस्तर क्षेत्र का व्यापक अध्ययन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पुनर्मुद्रित 2022, पृष्ठ–6–48.
7. शम्मी आबिदी एवं राजेंद्र सिंह, अबूझमाड़िया एक विशेष पिछड़ी जनजाति, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़, 2020.
8. शम्मी आबिदी एवं मोहन साहू, अबूझमाड़िया विशेष पिछड़ी जनजाति का आधारभूत सर्वेक्षण 2019–20, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़, 2020.
9. पी.एल. मिश्र, छत्तीसगढ़ हिस्ट्री आफ छत्तीसगढ़, विश्व भारती प्रकाशन सीताबर्डी नागपुर, 1970.
10. सुरेश तिवारी, बस्तर पर्यटन, इतिहास और संस्कृति, विश्व भारती प्रकाशन, नागपुर, द्वितीय संस्करण, 2011, पृष्ठ–148.
11. संजय अलंग, छत्तीसगढ़ इतिहास और संस्कृति, अनामिका प्रकाशन, तुलाराम बाग इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, 2016, पृष्ठ–166.
12. शिवकुमार पाण्डेय, अबूझमाड़ इतिहास व संस्कृति, जिला प्रशासन, नारायणपुर, छत्तीसगढ़ पुनर्मुद्रित 2018.